

Table of Contents

1. शेखर जोशी का परिचय
2. "संवादहीन" कहानी का सारांश
3. पात्र परिचय: ताई और मिट्टू
4. कहानी के केंद्रीय भाव एवं विषय
5. अलंकार एवं काव्य सौंदर्य
6. महत्वपूर्ण उद्धरण एवं पंक्तियों की व्याख्या
7. शब्द-संपदा

शेखर जोशी का परिचय

शेखर जोशी का जन्म सन् 1932 में अल्मोड़ा, उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के प्रमुख कहानीकार थे। उनका पहला कहानी संग्रह "कोसी का घटवार" सन् 1958 में प्रकाशित हुआ। उनकी अन्य प्रमुख रचनाओं में "साथ के लोग", "दाज्यू", "हलवाहा", "नौरंगी बीमार है", "आदमी का डर", "डांगरी वाले", "मेरा पहाड़" (कहानी संग्रह), "एक पेड़ की याद" (शब्दचित्र-संग्रह), "स्मृति में रहें वे" (संस्मरण), "न रोको उन्हें शुभ्रा" (कविता संग्रह), और "मेरा ओलिया गाँव" (आत्मवृत्त) शामिल हैं। उनकी कहानियों का संग्रह "शेखर जोशी कथा समग्र" के नाम से प्रकाशित है।

शेखर जोशी ने ग्रामीण-शहरी मध्यवर्गीय समाज के जीवन-मूल्यों तथा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के जीवन-संघर्षों को अपनी कहानियों में प्रमुखता से उभारा है।



मुख्य बिंदु

- ग्रामीण-शहरी मध्यवर्गीय समाज के जीवन-मूल्यों का चित्रण।

- मजदूरों के जीवन संघर्षों को प्रमुखता देना।
- सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति।
- प्राप्त पुरस्कार: महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, साहित्य भूषण सम्मान, अखिल भारतीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य पुरस्कार।
- सन् 2022 में उनका निधन।

अभ्यास प्रश्न

- शेखर जोशी की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
- उनकी कहानियों में किस प्रकार के समाज का चित्रण मिलता है?
- शेखर जोशी को कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए?

उत्तर कुंजी

- प्रमुख रचनाएँ: कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, आदि।
- ग्रामीण-शहरी मध्यवर्गीय समाज और मजदूर जीवन का चित्रण।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, साहित्य भूषण सम्मान, अखिल भारतीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य पुरस्कार।

शब्दावली

- मध्यवर्गीय - समाज का वह वर्ग जो आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से मध्यम होता है।
- संग्रह - संग्रहित रचनाओं का समूह।
- संस्मरण - जीवन के अनुभवों का लेखन।

"संवादहीन" कहानी का सारांश

"संवादहीन" कहानी एक ग्रामीण वृद्ध स्त्री ताई और उसके तोते मिट्टू के बीच के संबंधों को दर्शाती है। ताई के अकेलेपन और जीवन की कठिनाइयों के बीच मिट्टू उसके संवाद का माध्यम और ममता का केंद्र बन जाता है। कहानी में मनुष्य और पशु-पक्षी के बीच प्रेम, संवाद, और संघर्ष की झलक मिलती है। साथ ही यह कहानी पलायन, अकेलेपन, आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को भी उजागर करती है।



मुख्य बिंदु

- ताई और मिट्टू के बीच प्रेमपूर्ण संवाद।
- गांव के बड़े घर का सूना होना और परिवार का बिखरना।
- ताई की ममता और मिट्टू की बुद्धिमत्ता।
- अकेलेपन और संवादहीनता की समस्या।
- मिट्टू का पिंजरे से बाहर उड़ जाना और ताई का दुख।

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"गहरी साँस लेकर ताई कहती, 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?' और बंद पिंजड़े में अपने पंखों को फड़फड़ाता, उछल-कूद मचाता मिट्टू उत्तर देता, 'राम-राम कहो, सीताराम कहो।'"

हल किए गए उदाहरण

ताई और मिट्टू के संवादों से कहानी में उनके भावनात्मक संबंध स्पष्ट होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

- "संवादहीन" कहानी के मुख्य पात्र कौन हैं?
- कहानी में ताई और मिट्टू के संबंधों का क्या महत्व है?
- मिट्टू के पिंजरे से उड़ जाने का ताई पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर कुंजी

- मुख्य पात्र: ताई और मिट्टू।
- मिट्टू ताई के अकेलेपन का सहारा और संवाद का माध्यम है।
- मिट्टू के उड़ जाने से ताई का अकेलापन और बढ़ गया और वह दुखी हो गई।

शब्दावली

- पिंजड़ा - पक्षी को बंद करने का डिब्बा।
- अकेलापन - अकेले रहने की स्थिति।
- संवाद - बातचीत, बातचीत का माध्यम।
- ममता - स्नेह, प्रेम।
- पलायन - अपने स्थान से दूर जाना।

पात्र परिचय: ताई और मिट्टू

ताई एक वृद्ध ग्रामीण स्त्री है जो अपने बड़े घर में अकेली रह गई है। उसका परिवार शहरों में बस चुका है। मिट्टू उसका पालतू तोता है जो ताई के लिए केवल एक पशु नहीं, बल्कि संवाद और ममता का केंद्र है। दोनों के बीच प्रेम और संवाद की गहरी भावना है।

मुख्य बिंदु

- ताई का अकेलापन और जीवन की कठिनाइयाँ।
- मिट्टू की बुद्धिमत्ता और संवाद क्षमता।
- दोनों के बीच प्रेमपूर्ण और कभी-कभी नोक-झोंक भरे संवाद।
- मिट्टू ताई के जीवन में सहारा और खुशी लेकर आता है।

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"मिट्टू राम राम!" और ताई का आशीर्वाद "जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ"।

अभ्यास प्रश्न

- ताई और मिट्टू के बीच संवाद का क्या महत्व है?
- मिट्टू ताई के जीवन में किस प्रकार सहारा बनता है?

- कहानी में ताई के अकेलेपन को कैसे दर्शाया गया है?

उत्तर कुंजी

- संवाद ताई के अकेलेपन को कम करता है और उसे मानसिक सहारा देता है।
- मिट्टू ताई की ममता का केंद्र है और वह ताई को खुशी देता है।
- ताई के परिवार के बिखरने और शहरों में बस जाने से उसका अकेलापन स्पष्ट होता है।

शब्दावली

- अकेलापन - अकेलेपन की भावना।
- आशीर्वाद - शुभकामना।
- नोक-झोंक - छोटी-छोटी बहस।

कहानी के केंद्रीय भाव एवं विषय

"संवादहीन" कहानी के केंद्रीय भाव में अकेलापन, संवाद की आवश्यकता, ममता, और जीवन के यथार्थ की झलक मिलती है। यह कहानी सामाजिक विसंगतियों जैसे पलायन, वृद्धावस्था में अकेलापन, और आदर्श व यथार्थ के द्वंद्व को उजागर करती है।

मुख्य बिंदु

- अकेलापन और संवादहीनता।
- ममता और प्रेम।
- पलायन और सामाजिक परिवर्तन।
- आदर्श और यथार्थ का द्वंद्व।

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"ताई तो कुंभ-स्नान के लिए चल दीं। लेकिन जगन मास्टर के घर में महाकुंभ हो गया।"

अभ्यास प्रश्न

- कहानी में अकेलेपन का भाव कैसे प्रस्तुत किया गया है?

- संवादहीनता का क्या अर्थ है और यह कहानी में कैसे दिखती है?
- कहानी में आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व का उदाहरण दें।

उत्तर कुंजी

- अकेलापन ताई के जीवन में परिवार के बिखरने से उत्पन्न हुआ है।
- संवादहीनता ताई और मिट्टू के बीच संवाद के माध्यम से भी कभी-कभी टूट जाती है।
- ताई का कुंभ-स्नान जाना और मिट्टू का पिंजरे से उड़ जाना आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को दर्शाता है।

अलंकार एवं काव्य सौंदर्य

कहानी में अलंकारों का प्रयोग सीमित है, परंतु संवादों में अनुप्रास और पुनरुक्ति अलंकार मिलते हैं जो भावों को प्रगाढ़ करते हैं। कहानी की भाषा सरल और प्रभावशाली है जो पाठक को भावनात्मक रूप से जोड़ती है।

मुख्य बिंदु

- अनुप्रास: "राम राम", "सीताराम" जैसे शब्दों का पुनरावृत्ति।
- पुनरुक्ति: संवादों में शब्दों का बार-बार दोहराव।
- भावात्मक भाषा।

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"मिट्टू राम राम!" और "खुश रहो! खुश रहो!!"

अभ्यास प्रश्न

- कहानी में कौन-कौन से अलंकार पाए जाते हैं?
- पुनरुक्ति का क्या प्रभाव होता है?

उत्तर कुंजी

- अनुप्रास और पुनरुक्ति अलंकार कहानी में पाए जाते हैं।
- पुनरुक्ति से भावों की गहराई और प्रभाव बढ़ता है।

महत्वपूर्ण उद्धरण एवं पंक्तियों की व्याख्या

"गहरी साँस लेकर ताई कहती, 'भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?'" - यह पंक्ति ताई के जीवन की कठिनाइयों और अकेलेपन को दर्शाती है।

"मिट्टू राम राम!" - मिट्टू का यह संवाद ताई के लिए आशा और सहारा है।

"कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" - यह संवाद ताई के मनोबल और जीवन के प्रति आशा को दर्शाता है।

अभ्यास प्रश्न

- इन उद्धरणों का कहानी में क्या महत्व है?
- "कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!" संवाद से क्या भाव प्रकट होते हैं?

उत्तर कुंजी

- उद्धरण ताई के जीवन संघर्ष और आशा को प्रकट करते हैं।
- यह संवाद जीवन के प्रति आशा और धैर्य का प्रतीक है।

शब्द-संपदा

- ढोर** - पालतू गोजातीय पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द, चौपाया, डंगर।
- तकाजा** - आवश्यकता, इच्छा, अनुरोध, कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना, माँगना।
- कुशाग्र** - तीव्र, कुश की नोंक जैसा तीक्ष्ण।
- पौ फटना** - प्रातःकाल का प्रकाश, तड़का होना।
- अचकचाना** - भौचक्का होना, चौंक उठना।
- निहाल** - प्रसन्न, हर तरह से तृप्त।
- सत्ता** - अस्तित्व, यथार्थता, अधिकार, प्रभुत्व, प्रभुसत्ता।
- अतल** - अथाह, तलहीन।
- प्रसंग** - प्रकरण, संबंध, विषय का तारतम्य, एक प्रकार की संगति, लगाव।
- रोबीला** - प्रभावशाली।
- तुनकमिजाज** - जो झटपट या छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाए, नाजुक मिजाज।
- वियोग** - विच्छेद, विरह, अभाव, छुटकारा।
- साँकल** - जंजीर, सिकड़ी, शृंखला।
- टोह** - खोज, अनुसंधान, पता, देखभाल।
- देहरी/देहली** - दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाँघकर घर में घुसते-निकलते हैं।

- **मिजाज** - स्वभाव, तबीयत, प्रकृति, आदत, गर्व, घमंड।
- **प्रायश्चित** - शोधन, वह शास्त्र-विहित कर्म जो पाप का मार्जन करने के लिए किया जाए।
- **कौतूहलवश** - उत्सुकता, अचंभा, कुतूहल।
- **मशगूल** - कार्यरत, किसी काम या शगल में लगा हुआ।
- **अर्जन** - कमाना, संग्रह करना।
- **एवजी** - बदले में काम करने वाला, स्थानापन्न।
- **आग्नेय** - अग्नि से उत्पन्न, अग्नि जैसा।
- **जून** - वक्त, वेला, दिन का अर्द्ध भाग।





